श्री शिव चालीसा

अज अनादि अविगत अलख अकल अतुल अविकार ।
बंदौं शिव पद युग कमल अमल अतीव उदार ॥ १ ॥

आर्तिहरण सुखकरण शुभ भक्ति मुक्ति दातार ।
करौ अनुग्रह दीन लखि अपनो विरद विचार ॥ २ ॥

पर्यो पतित भवकूप महँ सहज नरक आगार ।
सहज सुहृद पावन पतित सहजहि लेहु उबार ॥ ३ ॥

पलक-पलक आशा भर्यो रह्यो सुबाट निहार ।
ढरौ तुरन्त स्वभाववश नेक न करौ अबार ॥ ४ ॥

जय शिव शङ्कर औढरदानी । जय गिरितनया मातु भवानी ॥ ५ ॥
सर्वोत्तम योगी योगेश्वर । सर्वलोक ईश्वर परमेश्वर ॥ ६ ॥

सब उर प्रेरक सर्वनियन्ता । उपद्रष्टा भर्ता अनुमन्ता ॥ ७ ॥
पराशक्ति पति अखिल विश्वपति । परब्रह्म परधाम परमगति ॥ ८ ॥

सर्वातीत अनन्य सर्वगत । निजस्वरूप महिमामें स्थितरत ॥ ९ ॥
अंगभूति भूषित श्मशानचर । भुजंगभूषण चन्द्रमुकुटधर ॥ १० ॥

वृषवाहन नंदीगणनायक । अखिल विश्व के भाग्य विधायक ॥ ११ ॥
व्याघ्रचर्म परिधान मनोहर । रीछचर्म ओढे गिरिजावर ॥ १२ ॥

कर त्रिशूल डमरूवर राजत । अभय वरद मुद्रा शुभ साजत ॥ १३ ॥
तनु कर्पूर गोर उज्ज्वलतम । पिंगल जटाजूट सिर उत्तम ॥ १४ ॥

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

www.viswakalyanam.org

भाल त्रिपुण्ड्र मुण्डमालाधर । गल रुद्राक्ष माल शोभाकर ॥ १५ ॥
विधि हरि रुद्र त्रिविध वपुधारी । बने सृजन पालन लयकारी ॥ १६ ॥

तुम हो नित्य दया के सागर । आशुतोष आनन्द उजागर ॥ १७ ॥
अति दयालु भोले भण्डारी । अग जग सबके मंगलकारी ॥ १८ ॥

सती पार्वती के प्राणेश्वर । स्कन्द गणेश जनक शिव सुखकर ॥ १९ ॥
हरि हर एक रूप गुणशीला । करत स्वामि सेवक की लीला ॥ २० ॥

रहते दोउ पूजत पुजवावत । पूजा-पद्धति सबन्हि सिखावत ॥ २१ ॥
मारुति बन हरि सेवा कीन्ही । रामेश्वर बन सेवा लीन्ही ॥ २२ ॥

जग जित घोर हलाहल पीकर । बने सदाशिव नीलकंठ वर ॥ २३ ॥
असुरासुर शुचि वरद शुभंकर । असुरनिहन्ता प्रभु प्रलयंकर ॥ २४ ॥

नमः शिवाय मन्त्र जपत मिटत सब क्लेश भयंकर ॥ २५ ॥
जो नर नारि रटत शिव शिव नित । तिनको शिव अति करत परमहित ॥ २६ ॥

श्रीकृष्ण तप कीन्हों भारी । ह्वै प्रसन्न वर दियो पुरारी ॥ २७ ॥
अर्जुन संग लडे किरात बन । दियो पाशुपत अस्त्र मुदित मन ॥ २८ ॥

भक्तन के सब कष्ट निवारे । दे निज भक्ति सबन्हि उद्धारे ॥ २९ ॥
शङ्खचूड जालन्धर मारे । दैत्य असंख्य प्राण हर तारे ॥ ३० ॥

अन्धकको गणपति पद दीन्हों । शुक्र शुक्रपथ बाहर कीन्हों ॥ ३१ ॥
तेहि सजीवनि विद्या दीन्हीं । बाणासुर गणपति गति कीन्हीं ॥ ३२ ॥

अष्टमूर्ति पंचानन चिन्मय । द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग ज्योतिर्मय ॥ ३३ ॥
भुवन चतुर्दश व्यापक रूपा । अकथ अचिन्त्य असीम अनूपा ॥ ३४ ॥

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133

काशी मरत जंतु अवलोकी । देत मुक्ति पद करत अशोकी ॥ ३५ ॥
भक्त भगीरथ की रुचि राखी । जटा बसी गंगा सुर साखी ॥ ३६ ॥

रुरु अगस्त्य उपमन्यू ज्ञानी । ऋषि दधीचि आदिक विज्ञानी ॥ ३७ ॥
शिवरहस्य शिवज्ञान प्रचारक । शिवहिं परम प्रिय लोकोद्धारक ॥ ३८ ॥

इनके शुभ सुमिरनतें शंकर । देत मुदित ह्वै अति दुर्लभ वर ॥ ३९ ॥
अति उदार करुणावरुणालय । हरण दैन्य दारिद्रय दुःख भय ॥ ४० ॥

तुम्हरो भजन परम हितकारी । विप्र शूद्र सब ही अधिकारी ॥ ४१ ॥
बालक वृद्ध नारि नर ध्यावहिं । ते अलभ्य शिवपद को पावहिं ॥ ४२ ॥

भेदशून्य तुम सबके स्वामी । सहज सुहृद सेवक अनुगामी ॥ ४३ ॥
जो जन शरण तुम्हारी आवत । सकल दुरित तत्काल नशावत ॥ ४४ ॥

दोहा

बहन करौ तुम शीलवश निज जनकौ सब भार ।
गनौ न अघ अघ जाति कछु सब विधि करो सँभार ॥ ४५ ॥

तुम्हरो शील स्वभाव लखि जो न शरण तव होय ।
तेहि सम कुटिल कुबुद्धि जन नहिं कुभाग्य जन कोय ॥ ४६ ॥

दीन हीन अति मलिन मति मैं अघ ओघ अपार ।
कृपा अनल प्रगटौ तुरत करो पाप सब छार ॥ ४७ ॥

कृपा सुधा बरसाय पुनि शीतल करो पवित्र ।
राखो पदकमलनि सदा हे कुपात्र के मित्र ॥ ४८ ॥

।। इति श्री शिव चालीसा सम्पूर्ण ।।

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133